VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 12 DEC 2020 No. 3
RECEIVED

SUBJECT:	ESSAY		Test Code:	1		4	5	7
Name of Candidate	SANDEEP KUMAR							
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	4	7	3	8	1	7
Center	MN	Date	0	9	1	2	2	0

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें आप शांति में बेहतर सीखते हैं, कुछ जिन्हें तूफान में।

" वसुधा का नेता कौन हुआ?
भूखंड विजेता कौन हुआ?
अतुलित यश क्रेता कौन हुआ?
नव धर्म प्रणेता कौन हुआ?
जिसने न कभी आराम किया,
विघ्नों में रहकर काम किया।"

यह पंक्तियाँ निरंतर संघर्ष एवं चुनौतियों ~~कामस~~ के साथ सीखने की प्रेरणा देती हैं। भगवान राम, महात्मा बुद्ध एवं गाँधीजी तक के इतिहास में चुनौतियों का सामना करने वाला ही नेता हुआ है। चुनौतियों एवं तूफानों से जो जो अनुभव सीखते हैं वह अमृत के समान होता है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यही अमृत हमें दया, करुणा, प्रेम एवं सत्य जैसे मूल्य सीखाता है। इसी अमृत का ही रूप इहलौकिकवाद, नवजागरण, न्याय, समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व जैसे आधुनिक मूल्य भी देखते हैं। शांति काल में व्यक्ति कला, साहित्य एवं चिंतन-मनन की श्रेष्ठता को प्राप्त करता है। शांति काल योग, दर्शन एवं सृजन के लिए महत्वपूर्ण होता है।

उपर्युक्त शीर्षक के विश्लेषण हेतु हमें इस प्रश्न पर विचार करना होगा कि सीखने पर परिस्थितियों का प्रभाव कैसे पड़ता है। सीखने से आशय हमारा क्या है। सीखने का आशय व्यक्ति एवं समाज में चुनौतियों का समाधान एवं क्षमता निर्माण से है। सीखना व्यक्ति के द्वारा निरंतर जारी रखने वाली प्रक्रिया है। वहीं सीखना परिस्थितियों से प्रभावित भी होता है। इसको हम राकेश मोहन के

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

आषाढ़ के एक दिन नाटक में भी देख सकते हैं "व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में योग्यता का योगदान एक-चौथाई होता है शेष काम परिस्थितियों एवं प्रतिभा द्वारा किया जाता है"

इस संदर्भ में हम जब इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि स्वतंत्रता, समानता, न्याय जैसे मूल्य अमेरिका, फ्रांस एवं रूस की क्रांतियों के बाद ही मिले हैं। महिलाओं के सशक्तीकरण की पहल भी प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ही हुई है। औद्योगिकरण भी जनसंख्या वृद्धि का ही एक प्रतिफल है। ~~लेकिन~~ वर्तमान समय में तकनीकी विकास भी चुनौतियों के समाधान के क्रम में ही हुआ है। संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन भी द्वितीय विश्व युद्ध की परिस्थितियों के बाद ही हुआ है जो शांतिकाल में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बेहतर कार्य नहीं कर पा रहा है।

भारत का संविधान भी राष्ट्रीय आंदोलन के संघर्ष का फल है। जिसमें अंतिम व्यक्ति के कल्याण का भाव निहित है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के उच्च आदर्श भी संघर्ष में ही विकसित हुए हैं। 1976 में जननायक जयप्रकाश नारायण के आंदोलन का ही परिणाम है कि इसके बाद आपातकाल के प्रावधान (अनुच्छेद 352) का दुरुपयोग नहीं हुआ है।

वहीं भारत की बंगलादेश मुक्ति अभियान से पहले शांति काल की युद्ध अभ्यास की रणनीति ने पाकिस्तान को 92,000 सैनिकों के साथ आत्मसमर्पण हेतु मजबूर किया। यह अनुभव सीखाता है कि शांतिकाल का सदुपयोग करके हमें युद्ध कालीन (तूफान) परिस्थितियों में बेहतर कार्य कर सकते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आर्थिक क्षेत्र में भी संकट काल के समय में सुधारों हेतु महत्वपूर्ण होता है। 1929 की वैश्विक मंदी ने पूंजीवाद के स्वरूप में परिवर्तन किया। पूंजीवाद व्यवस्था लोगों के कल्याण की मांग बढ़ाने के रूप में देखने को मिली। ब्रिटेनवुड संगठनों का निर्माण भी वैश्विक चुनौतियों के समाधान हेतु ही किया गया। भारतीय संदर्भ में भुगतान संकट के बाद उदारीकरण निजीकरण एवं वैश्वीकरण का प्रारंभ हुआ।

कोरोना के संकट के बाद स्वास्थ्य सेवाओं पर ध्यान दिया जा रहा है। कोरोना वैश्विक चुनौति के रूप में सामने आई है। वैश्विक स्तर पर ही टीके के विकास हेतु प्रयास किया जा रहा है। मानव ने प्रत्येक संकट के बाद ही तकनीकी विकास किया है। पर्यावरणीय संकट के बाद पर्यावरण अनुकूल तकनीकी को

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति में आपद्‌ धर्म की व्याख्या की गई है जो विपरीत परिस्थितियों में सार्वभौमिक मूल्य में परिवर्तन की बात को स्वीकार करता है जैसे किसी अपराधी से किसी की जान बचाने हेतु झूठ बोलना गलत नहीं है। ~~इस~~ गीता का यह आपद्‌ धर्म का सिद्धांत दया, करुणा, सेवा जैसे मूल्यों को मानव कल्याण के लिए समर्पित है।

इस संदर्भ में चर्चा को विस्तार देने के लिए दूसरे प्रश्न विचार करना होगा। क्या शांतिकाल में भी हम बेहतर सीख सकते हैं। इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमें शांतिकाल की सीखों पर विचार करना होगा। अशोक ने

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मानव कल्याण हेतु युद्ध नीति त्याग दी। उन्होंने सर्वधर्म ~~समभाव~~ समन्वय एवं सभी के कल्याण को जीवन का उद्देश्य चुना। भगवान राम ने भी युद्ध कला बाल्यकाल में सीखी। उस समय उनके समक्ष भी कोई बड़ी चुनौती नहीं थी।

विज्ञान के क्षेत्र में विद्युत का आविष्कार, राइट बंधुओं द्वारा हैलीकॉप्टर का आविष्कार एवं चुंबकत्व जैसे सिद्धांत मानव की जिज्ञासा का समाधान है। यह अलग बात है कि इनके कारण मानव कल्याण एवं जीवन आसान हुआ है।

संसाधनों का बेहतर उपयोग भी तकनीकी विकास से ही संभव हो पाया है। आर्थिक संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग शांतिकाल में ही बेहतर हुआ है। ~~रेलवे~~

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कृषि का विकास, उद्योगों का विकास एवं नवीन प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अवसरों का सृजन भी शांतिकाल में ही हुआ है।

शांतिकाल में ही चीन ने अपना आर्थिक विकास किया है। अमेरिका का आर्थिक विकास की कहानी भी शांति के साथ है। भारत ने भी 2004 से 2014 के बीच 27 मिलयन लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। इस समय वंचित वर्गों, दिव्यांगों एवं महिला सशक्तिकरण जैसे प्रयास शांति की सीख ही है।

शांतिकाल में हम ललित कलाओं के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सीख ग्रहण कर सकते हैं। मुगल काल में एक केन्द्रीय सत्ता के होने के कारण साहित्य,

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

चित्रकला, मूर्तिकला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में बेहतर कार्य हुआ। भाषा एवं साहित्य के स्तर पर उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली है -

"कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत हैं नैन सों बात।"

इन पंक्तियों में भाषा की क्षमता एवं संप्रेषण क्षमता बेहतरीन है।

भारत में स्वतंत्रता के बाद का साहित्य भी चिंतन-मनन शैली को विकसित करता है और व्यक्तिवाद की उन्नति की प्रेरणा देता है।

भारत में न्यायिक प्रक्रिया का विकास न्यायिक सक्रियता की ओर कैसे बढ़ता है। यह शांतिकाल की श्रेष्ठ फल है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जो अंतिम व्यक्ति न्यायपालिका के ~~अपने~~ ~~कम~~ माध्यम से विभिन्न जनहित के निर्णय प्राप्त करता है। वहीं गांव के विकास हेतु पंचायती राज एक महत्वपूर्ण कदम है। सुशासन की संकल्पना भी भारतीय राजनीति की शांति में सीखी गई एक पहल है।

समग्रत: हम कह सकते हैं कि तूफान और शांति दोनों में बेहतर सीख सकते हैं। रचनात्मक एवं सृजनात्मकता शांति काल में ही बेहतर सीखी जा सकती है। भारत को गरीबी, कुपोषण एवं सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई शांति के साथ ही लड़नी होगी। समाज को तार्किक एवं ज्ञान आधारित बनाने की लड़ाई भी शांति के साथ ही लड़नी होगी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के शांति व तूफान में सीखा गया अनुभव बेहतर होता है आवश्यकता है शांति के समय सीखा गया अनुभव एवं निष्कर्ष तूफान के समय काम दें और तूफान के समय सीखी गई गया अनुभव शांति के समय काम दें।

प्रत्येक सीख का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति का कल्याण एवं सर्वांगीण विकास ही है। हमें वैश्विक मानव के कल्याण हेतु प्रयास करना चाहिए। दोनों सीखा समय सीखी गई बातों को संजोकर ही संविधान के आदर्श एवं सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। मानव को ज्ञान एवं कौशल से युक्त बनाकर ही नवीन सभ्यता, नवीन मानव धर्म एवं नवीन युग का सृजन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

किया जा सकता है। * इन नवीन सीखों से ही विश्व कल्याण एवं बंधुत्व का निर्माण होगा। इसी सीख एवं चुनौति के साथ व्यक्ति को आगे बढ़ना होगा –

ऊँचाईयाँ गर बुलन्द है
तो मौजूद हैं रास्ते
हमें तो निकलना है बस
तरक्की के वास्ते।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

खंड - 'ब'

संस्थागत स्वायत्तता भी इतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी की जवाबदेही

वर्तमान विश्व व्यवस्था को बनाए रखने हेतु संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। विश्व के कल्याण हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन का स्वायत्त एवं जवाबदेह होना आवश्यक है। विश्व बंधुत्व की भावना के साथ सभी राष्ट्रों में समन्वय भी संस्थाओं के माध्यम से ही सुनिश्चित हो सकता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देशों के शासन व्यवस्था का मूल आधार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भी संस्थाओं का स्वायत्त एवं जवाबदेह होने में ही है यहाँ तक कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास भी अधिकार एवं कर्तव्य के बेहतर तालमेल के साथ है। समाज को ज्ञान आधारित एवं तार्किक बनाने में स्वायत्त एवं जवाबदेहिता आदि का सत्य, करुणा, संवेदनशीलता जैसे मूल्यों का ~~साथ~~ ही योगदान है।

स्वायत्तता से तात्पर्य किसी संस्था द्वारा बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के कार्यों का किया जाना है। जवाबदेहिता अपने कार्यों के प्रदर्शन में पारदर्शिता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों के गुण को निहित करती है। इन्हीं गुणों के निर्वहन का उत्तरदायित्व एवं जनता के प्रति जवाबदेह होना है। संसद भारत के लोगों के प्रति जवाबदेह है। संसद

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अपने कार्यों में स्वायत्त भी है।

प्राचीन काल में भारतीय समाज की समितियां जनता के प्रति जवाबदेह थी। रामायण में राम भी जनता के प्रति जवाबदेह थे। राम राज्य में प्रजा के सुखों को महत्वपूर्ण माना है। आधुनिक समाज का विकास की स्वायत्तता एवं जवाबदेही की यात्रा है। ब्रिटेन के मैग्नाकार्टा, अमेरिका में लोकतंत्र एवं यूरोपीयन देशों की लोकतांत्रिक व्यवस्था का विकास संस्था के उत्तरदायी, जवाबदेही एवं स्वायत्तता का ही है।

अमेरिका के लोकतंत्र के मजबूत होने में संयुक्त राज्य अमेरिका की संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। शक्ति के पृथक्करण का, विधायिका में समन्वय बेहतरीन न्यायपालिका, है। संयुक्त राज्य अमेरिका संघात्मक व्यवस्था भी स्वायत्त एवं जवाबदेह है। अमेरिका की कांग्रेस सीनेट राज्यों का समान प्रतिनिधित्व संराज्यों के हितों का संरक्षण करता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारतीय चुनाव प्रणाली, संसदीय व्यवस्था, न्यायपालिका स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता, संघ राज्य संबंध जैसे ~~संस्थागत~~ संस्थाएं लोकतंत्र को अधिक मजबूत बनाने का काम किया है। भारत का चुनाव आयोग विश्व की बेहतरीन संस्था है।

कार्यपालिका के नियंत्रण हेतु को संसद के प्रति जवाबदेह, न्यायिक समीक्षा, संघ लोक सेवा आयोग एवं कैग जैसी संस्थाओं को स्वायत्त एवं जवाबदेह बनाकर सुनिश्चित किया है। विधायिका की स्वायत्तता सुनिश्चित की गई है। संसद में सांसदों के कर्तव्य के निर्वहन एवं भाषण आदि को न्यायिक कार्यवाही से मुक्त रखा गया है।

भारत में शिक्षा व्यवस्था में स्वायत्तता को सुनिश्चित करने हेतु विश्वविद्यालय एवं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

शैक्षिक संस्थाओं को पर्याप्त अधिकार दिए गए हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में IIT, IIM एवं IISC ने वैश्विक स्तर पर बेहतर प्रदर्शन किया है।

सिविल सेवाओं के कर्तव्य निर्वहन में स्वतंत्रता को संरक्षित संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से किया गया है। लोक सेवकों का योजनाओं के क्रियान्वयन, निर्माण एवं नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्र में नियामकों को पर्याप्त स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता दी गई है। अमेरिका में फेडरल बैंक की भांति भारतीय रिजर्व बैंक ने भी बेहतर कार्य किया। सेबी, बीमा नियामक एवं प्रतिस्पर्द्धा आयोग ने भारत के बाजार को निवेश के अनुकूल बनाया है।

इन सभी नियामकों को सरकार के माध्यम से जनता के प्रति जवाबदेह

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भी बनाया है। कृषि क्षेत्र में मूल्य निर्धारण हेतु सी.ए.सी.पी. आयोग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

इसी प्रकार तकनीकी विकास को बढ़ावा देने हेतु इसरो एवं रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (DRDO) को भी पर्याप्त स्वायत्तता दी गई है। इसी स्वायत्तता का परिणाम है कि इसरो ने वैश्विक स्तर पर तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कोरोना के प्रबंधन हेतु स्थानीय प्रशासन एवं लोगों की भागीदारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्थानीय प्रशासन को स्वायत्तता एवं जवाबदेह बनाकर ही जन जागरूकता के अभियान प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाया गया है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आंतरिक सुरक्षा के क्षेत्र में नक्सलवाद, उग्रवाद, तस्करी एवं कानून व्यवस्था का बेहतर प्रबंधन कानून प्रवर्तन एजेंसियों को स्वायत्त बनाकर ही किया जा सकता है।

समग्रत: हम इस विवरण से स्वायत्तता एवं जवाबदेहिता के महत्व को संस्थागत विकास हेतु देखता है। लेकिन वर्तमान समय में संस्थाओं में स्वायत्तता एवं जवाबदेहिता के लिए चुनौति देखने को मिल रही है।

विश्व स्तर की संस्थाओं में महाशक्तियों का हस्तक्षेप देखने को मिल रहा है। संयुक्त राष्ट्र की स्वायत्तता को प्रभावित हुई है। सुरक्षा परिषद में अफ्रिका, दक्षिण अमेरिका एवं भारत जैसे देशों का प्रतिनिधित्व नहीं है। विश्व व्यापार संगठन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भी महाशक्तियों के प्रति ही जवाबदेह है। वैश्विक संस्थाओं में वित्त की समस्या भी देखने को मिलती है। वित्त की समस्या स्वायत्तता एवं जवाबदेहिता को प्रभावित करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की कार्यप्रणाली भी प्रश्नों के घेरे में रही है।

भारत में न्यायिक अतिसक्रियतावाद ने चैक एंड बैलेंस के सिद्धांत को प्रभावित किया है। कार्यपालिका द्वारा भी अपने कार्यों में संसद की भूमिका को कम करने के प्रयास किए हैं। 16वीं लोकसभा में 25% विधेयक ही संसदीय समितियों के पास भेजे गए हैं।

पंचायती राज के कार्यों में भी राज्य सरकारों द्वारा हस्तक्षेप किया जाता है वित्त, कार्मिक एवं कार्यों में भी हस्तक्षेप देखने को मिलता है। नियोजन का कार्य भी डाउन टू टॉप की अप्रोच

पर कार्य नहीं कर रहा है।

यदि संस्थाओं में स्वायत्तता एवं जवाबदेह नहीं होगी तो वे भ्रष्टाचार, निरंकुशता एवं असंवेदनशीलता जैसी समस्याओं से ग्रसित होंगी। अंतिम व्यक्ति का कल्याण भी प्रभावित होगा। उत्तरी कोरिया द्वारा जनता के प्रति निरंकुशता इस संदर्भ में बेहतरीन उदाहरण है।

सरकार ने स्वायत्तता एवं जवाबदेहिता को सुनिश्चित करने हेतु कई स्तरों पर प्रयास किए हैं। 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन ~~अधिनियमों~~ के माध्यम से पंचायती राज एवं नगरी स्वशासन की स्थापना की गई है।

संविधान की सर्वोच्चता के सिद्धांत को स्वीकार कर संसद को स्वायत्त एवं जवाबदेह बनाया है वहीं संविधान

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के विभिन्न प्रावधानों के माध्यम से विभिन्न संस्थाओं को स्वायत्त बनाया है जैसे चुनाव आयोग, संघ लोक सेवा आयोग आदि।

वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों की सरकारों ने क्षेत्रीय संगठनों, द्विपक्षीय संबंधों पर अधिक बल दिया जा रहा है। ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन, बिम्सटेक एवं आसियान जैसे संगठनों में सभी को समान महत्व दिया है।

इसी क्रम में वित्तीय संगठनों का भी गठन किया है। नवीन संगठन जो विकासशील विश्व को भी प्रतिनिधित्व करते हैं:- न्यू डेवलपमेंट बैंक।

इस संदर्भ में महत्वपूर्ण यह है कि संगठनों की स्वायत्तता एवं जवाबदेहिता सुनिश्चित हो लेकिन पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा

एवं संवेदनशील वर्गों के प्रति सहानुभूति जैसे मूल्य भी संस्था में निहित होने चाहिए।

वैश्विक स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं विश्व व्यापार संगठन को सभी देशों के प्रति जवाबदेह एवं स्वायत्तता देने की आवश्यकता है। सुरक्षा परिषद में सुधार इस दिशा में महत्वपूर्ण है। वैश्विक संस्थाओं को बहुध्रुवीय एवं नियम आधारित विश्व व्यवस्था के लिए कार्य करना चाहिए।

भारत में स्वायत्तता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने हेतु संसद को प्रभावी बनाना चाहिए। इसमें नियत दिन कार्य के लिए निर्धारित करना चाहिए। न्यायपालिका को नियुक्ति एवं कार्यों में पारदर्शी प्रणाली अपनानी चाहिए। इस संदर्भ राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग की भावना का भी सम्मान

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

करना चाहिए। पंचायतों को भी स्वायत्त एवं स्वतंत्र बनाना चाहिए। डाउन & टॉप अप्रोच को नियोजन में बढ़ावा देना चाहिए। चुनाव आयोग को बेहतर बनाने हेतु भी सभी आयुक्तों को संवैधानिक संरक्षण एवं आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया में विपक्ष का नेता एवं मुख्य न्यायधीश को शामिल करना चाहिए।

संस्थाओं की जवाबदेही एवं स्वायत्तता को सुनिश्चित करके ही हम सतत विकास लक्ष्य एवं संविधान के आदर्शों को प्राप्त कर सकते हैं। वैश्विक समस्याओं का समाधान भी रविन्द्र टैगोर के वैश्विक मानववाद में है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5W — What — (ऐतिहासिक) — कारण; Where — I, II WW, क्रांति के बाद; When; Who; Why; How

> कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें आप शांति में बेहतर सीखते हैं और कुछ जिन्हें तूफान में।

→ ऐतिहासिक
- विश्व → I, II WW में महिला सशक्तीकरण; अमेरिका, फ्रांस की क्रांति
- भारत → स्वतंत्रता के बाद संविधान
- स्थानीय → मुगल काल में एक केन्द्रीय सत्ता — स्वर्णिम काल

समाज → महिला अधिकार
- आंदोलन के बाद → अंग्रेजों द्वारा
- दिव्यांग
- तृतीय लिंग

संसाधन का उत्पादन — शांति में बेहतर — मानव विकास

राजनीति →
- न्यायपालिका की व्याख्या
- संसद राजनेता → मुश्किल समय में अच्छा नेतृत्व

किसान आंदोलन के बाद लोकपाल — छात्र, नेता, बालक

→ do & die, constructive चिंतन, शांत दिमाग बेहतर समस्या समाधान

→ कूटनीति → शांति काल की कूटनीति — युद्ध काल में बेहतर
- बांग्लादेश युद्ध रणनीति (1971)

शासन व्यवस्था → आपदा प्रबंधन — कोरोना; शांति काल में — विकास गतिविधि

→ स्वदेशी — शांति काल का — तूफान → रणनीति; गीता

नैतिक मूल्य → आपद धर्म; शांति में क्या धर्म करुणा; मूल्य की परिस्थिति के अनुसार बदलते हैं

आर्थिक → भारत 1991 के आर्थिक सुधार — उदारीकरण; 1929 की मंदी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्वतंत्रता

कैसे है

कारण

शांति में ही बेहतर क्यों
① चिंतन व मनन के कारण
② ललित कला

सरकार
— UN 1945 के युद्ध की परिस्थिति

सुझाव
→ संकट के समय का उपयोग शांति काल के काम लो।
→ गांधी जी ने भी राष्ट्र निर्माण में शांति का
→ व्यक्ति के स्तर पर बेहतर विकास बौद्धिक नागरिक
समाज — विज्ञान एवं ज्ञान आधारित
राष्ट्र →

बाधा विघ्नों को चूर-चूर
सह धूप गम पानी पत्थर
पांडव

इतिहास → गणतंत्रात्मक व्यवस्था →
→ विश्व —

समाज
→ विश्व → एकल परिवार → सरकार → धर्म
→ भारत → परिवार संस्था — स्थापना — धर्म
→ व्यक्ति → अपने निर्णय → परिवार → समाज का दबाव

UNO, World Bank
WTO

polity
→ विश्व → संघ-राज्य — U.S.A. → U.S. का लोकतंत्र मजबूत — संस्थाओं
→ भारत → न्यायपालिका
संघ राज्य संबंध
चुनाव, CAG, मानवाधिकार आयोग, UPSC
→ विश्व विद्यालय
→ स्थानीय
पंचायती राज, जिला योजना Committee

कूटनीति शांति → लोक सेवा → plan, योजना क्रियान्वयन, नीति निर्माण

SHG →

economy → RBI, SEBI, PFRDA — नियामक
प्रतिस्पर्धा आयोग

आंतरिक सुरक्षा → सुरक्षा एजेंसी, देश की सुरक्षा
— एकता अखंडता

What → है क्या?　　When → कब　　How

Where → कहाँ – नीति, विभाग, कार्यान्वयन　　Why – स्वायत्तता क्यों महत्वपूर्ण है, जवाबदेही

Who → लोग, नागरिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

संस्थागत स्वायत्तता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी की जवाबदेही।

कैसे – क्यों (2) – सरकारी प्रयास (2) – सुझाव (2)

कैसे

क्यों: अंतिम व्यक्ति का कल्याण

यदि न हों तो?

- स्वायत्तता – संस्था अच्छे से काम नहीं कर पाएगी।
  - UN security council, WTO
  - पंचायती राज, नियुक्ति, कार्मिक, अपने को पुरस्कृत
    - पुलिस
    - चुनाव आयोग
- जवाबदेही : जनता के प्रति
  - निरंकुशता पर रोक
  - जवाबदेही → कोई भी व्यवस्था बेहतर
  - भ्रष्टाचार, निरंकुश, असंवेदनशील,
  - द. कोरिया सरकार, भारत की सरकार,

सरकारी प्रयास

→ संविधान, न्यायिक स्वतंत्रता, चुनाव, संवैधानिक व्यवस्था

→ संसद – स्वायत्त, जवाबदेह | क्षेत्रीय संगठन, SCO, BRICS
– जलवायु परिवर्तन

सुझाव

→ वैश्विक स्तर पर UN को स्वायत्त एवं जवाबदेह
- अफ्रीका – प्रतिनिधित्व – शांति सेना
- भारत → UNSC

SRT → ISRO, DRDO

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- बहुध्रुवीय, Rule based विश्व व्यवस्था

- भारत के स्तर पर
  - → चुनाव सुधार, संसद / विधानसभा के घंटे नियत हों
  - → न्यायपालिका की नियुक्ति, collegium पारदर्शी हो NJAC की भावना के अनुसार काम।
  - पंचायतों को अधिकार दें
  - SIGN to CTU approach नीति निर्माण में विकसित हो।

I

संस्थागत स्वायत्तता से आशय अपने कार्यों को करने में बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त हो। संस्थागत जवाबदेही से तात्पर्य संस्था किसी अपने किए गए कार्यों में पारदर्शिता, संवेदनशीलता, और तरफदारी जैसे मानकों क

→ संसद लोगा भारत के नागरिकों

संस्थागत स्वायत्तता एवं जवाबदेही दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। यह एक सिक्के के दो पहलू हैं।